हिंदुस्तानी संगीत गायन एवं वादन

कक्षा 11 के लिए संगीत की पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

11154

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Reprint 2026-27

11154 – हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन
कक्षा 11 के लिए संगीत की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5580-085-5

प्रथम संस्करण
जुलाई 2022 आषाढ़ 1944
पुनर्मुद्रण
अगस्त 2024 भाद्रपद 1946
जनवरी 2025 पौष 1946

PD 2T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2022

₹ 355.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा वी.के. ग्लोबल डिजिटल, प्लॉट नंबर-928, सेक्टर-68, आई.एम.टी. फरीदाबाद, हरियाणा–121004 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पानीहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	*जहान लाल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*सायुराज ए.आर.*

आवरण एवं चित्रांकन
बैनियन ट्री

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) से लेकर माध्यमिक शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के विभिन्न चरणों में विस्तार से वर्णित है कि संगीत, कला एवं शिल्प कला विषयों पर विशेष बल दिया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस बात पर बल देती है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण एवं संतुलित विकास हेतु तथा उम्र के प्रत्येक पड़ाव पर विद्यार्थियों के लिए क्या रुचिपूर्ण है और क्या नहीं, इसके लिए स्कूल के पूरे पाठ्यक्रम में संगीत, कला एवं शिल्प का अवश्य ही समावेश किया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आगे इस बात पर प्रकाश डालती है कि विद्यार्थियों को, विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन करने के लिए, अधिक लचीलापन और विषयों के चुनाव के विकल्प दिए जाएँगे— इन विषयों में कला और शिल्पकला भी शामिल होंगे।

संगीत कला एवं शिल्पकला आदि विषयों का चयन मानविकी और भारतीय कला की मांग बढ़ाएगी। स्थानीय भौगोलिक संदर्भों के आधार पर इस विषय पर ज्ञान अर्जित करना हर एक भारतवासी को सशक्त बनाएगी। भारत एक विकसित देश बनने के साथ-साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषावाद और भारत की प्राचीन भाषाएँ और संस्कृत सीखने पर विशेष बल दिया गया है। संस्कृत ग्रंथों में संगीत के अपार भंडार हैं। भारतीय संगीत के गहन अध्ययन से भाषा के साथ-साथ संगीत विषय एवं उसके विकास का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

विशेष प्रतिभा वाले और मेधावी विद्यार्थियों की सहायता हेतु म्यूजिक परफामेंस सर्कल, लैंग्वेज सर्कल, ड्रामा सर्कल इत्यादि स्कूल, ज़िलों और उससे आगे के स्तरों पर विकसित किए जाएँगे। यह पाठ्यपुस्तक स्कूली शिक्षा के अन्तराल में बच्चों के मूल्य संवर्द्धन हेतु उपर्युक्त लक्ष्यों के संदर्भ में प्रासंगिक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट करती है कि कला शिक्षा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लाने के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों एवं शिक्षक शिक्षा संस्थानों में संगीत के पाठ्यक्रम को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में संगीत— गायन एवं वादन के शिक्षक विगत अनेक वर्षों से विद्यार्थियों का ज्ञानवर्द्धन करते रहे हैं। गायन एवं वादन की विविध विधाओं का प्रस्तुतिकरण आज शिक्षार्थियों, कलाकारों व संगीत मर्मज्ञों की जीविकोपार्जन का उत्तम साधन है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की विश्व स्तर पर एक अनूठी पहचान है। इस महान संस्कृति के संरक्षण एवं उन्नयन का दायित्व भी हमारे कंधों पर है। इस धरोहर को आइए सब मिलकर सँभालें।

उच्च माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक *हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन* प्रकाशित की जा रही है, जो विद्यार्थियों को गायन एवं वादन के क्षेत्र में उच्चस्तरीय अध्ययन हेतु प्रेरित करेगी। गायन एवं वादन में रुचि रखने वाले कला प्रेमियों के लिए भी यह पाठ्यपुस्तक अत्यंत लाभप्रद

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

होगी। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, संगीत के प्राचीन ग्रंथों का ज्ञान, विभिन्न गायन-वादन शैलियाँ, प्रमुख कलाकारों का योगदान, उनके घराने, प्रचलित वाद्य पाठ्यक्रम के रागों का सैद्धांतिक व प्रयोगात्मक पक्ष, विभिन्न तालों का ज्ञान इन सभी विषयों का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता और सुधार के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् वचनबद्ध है। इस हेतु परिषद् सुझावों एवं टिप्पणियों का स्वागत करती है जो भविष्य में इसके संशोधन और परिष्करण में हमारी सहायता करेंगे। मैं आशा करता हूँ कि विद्यार्थी इस पाठ्यपुस्तक में उपलब्ध विषय-वस्तु एवं पाठ्य-सामग्री से अपना ज्ञानवर्धन करेंगे।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
05 जुलाई 2022

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

प्राक्कथन

प्यारे बच्चो,

ललित कलाओं में संगीत का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संगीत ने न केवल भारत में बल्कि विश्व में भी अपनी उत्कृष्ट पहचान बनाई है। मानव जीवन के विभिन्न सरोकारों से जुड़े होने और अपनी आध्यात्मिक ऊँचाइयों के कारण भारतीय संगीत को विश्वव्यापी लोकप्रियता और सम्मान मिला है। दुनिया भर के संगीतकारों ने इसकी श्रेष्ठता को स्वीकार किया है। मौसम तथा अवसर चाहे कोई भी हो, संगीत ने अपने सुरों से हमेशा समारोह के आकर्षण को बढ़ाया है। सभी उपासना पद्धतियों में अपने देवी-देवताओं की आराधना के लिए संगीत के स्वर और लय का प्रयोग किया जाता है। संगीत से मन को एकाग्रचित करने में सहायता मिलती है। इसी कारण प्रात:काल संगीत के माध्यम से दिन की शुरुआत करने से मन शांत, आनंदमय एवं ओजमय रहता है। किसी शिशु के जन्म से लेकर किसी वृद्ध की मृत्यु तक हमारे समाज में संगीत एक आवश्यक तत्व है। संगीत की इन्हीं विहंसते, मचलते और भावनाओं के असीम आकाश में अठखेलियाँ करते स्वरों को अनुशासित और लयबद्ध करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की गायन विधाएँ और वाद्यों का आविष्कार एवं निर्माण प्राचीन काल से होता रहा है।

स्वर, लय एवं पद के समावेश से संगीत का सृजन होता है। भली-भाँति जाँच करने से समझ में आता है कि हमारे जीवन के बहुत से क्रियाकलाप संगीत से जुड़े हुए हैं। हमें ऐसा भी एहसास होता है कि संगीत हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। आकाश में सूर्य किरणों के आगमन के साथ ही मंदिरों में आरती के स्वर गूँजने लगते हैं, गुरुद्वारों में कीर्तन, चर्च में ईसा मसीह के गीत तथा मस्जिदों में अज़ान के स्वर गूँजने लगते हैं। कुछ वाद्य यंत्र, जैसे— घंटा, मंजीरा, पिआनो, ढोलक, हारमोनियम इत्यादि की ध्वनियाँ भी प्रात:काल की सौम्यता को उत्कृष्ट बनाती हैं।

जब आप साँस लेते हैं तो क्या उसमें कुछ संगीतमय होता है? सोचिए और विचार कीजिए कि हमारे दैनिक जीवन में बात करना, अपने हाथ-पैर को हिलाना, कोई भी वाहन चलाना, एक पक्षी का आकाश में उड़ना, रेलगाड़ी का चलना, सूर्य का अपनी धुरी पर घूमना एवं पृथ्वी का उसके चारों तरफ चक्कर लगाना, पेड़-पौधों का झूमना और भी न जाने कितने क्रियाकलाप हमारे चारों तरफ होते रहते हैं। क्या आप इन क्रियाओं में स्वाभाविक रूप से व्याप्त सांगीतिक ध्वनि (स्वर और लय युक्त) को महसूस कर सकते हैं? अगर इन सभी क्रियाओं पर सोच-विचार करें, तो पता चलता है कि संगीत के तत्व सर्वव्यापित हैं।

हमारे देश का संगीत विभिन्नताओं का भंडार है। प्रत्येक प्रांत समृद्ध होने के कारण हमारे देश में संगीत का अथाह सागर है। उसमें वहाँ के पर्व, ऋतुओं, प्रकृति आदि का मनोरम चित्रण होता है। संगीत हमसे और हम संगीत से कितनी गहराई, मज़बूती और अभिन्नता से जुड़े हुए हैं, यह बात आसानी से समझी जा सकती है जब हमारे जीवन के हर क्षण, हर मांगलिक अवसर, हर रीति-रिवाज के साथ हम संगीत को जोड़ पाते हैं। कई सदियों से भारतीय संगीत के विभिन्न पक्षों

© NCERT not to be republished

पर संगीतज्ञों द्वारा शोध एवं विकास की परंपरा चली आ रही है। संगीत के मनीषियों द्वारा किए गए इस विशाल शोध के सागर से प्राप्त इन तथ्य रूपी-मोतियों को आप जैसे बुद्धिमान, विकासशील एवं सृजनात्मक बच्चों तक इस पाठ्यपुस्तक *हिंदुस्तानी संगीत– गायन एवं वादन* के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। यह पाठ्यपुस्तक हिंदुस्तानी संगीत के अंतर्गत गायन एवं वादन के विषयों पर विचार-विमर्श हेतु तैयार की गई है।

बच्चो, आप अपने परिवेश में किसी-न-किसी प्रकार का संगीत अवश्य सुनते होगे। वह संगीत की कोई भी विधा हो सकती है— लोक संगीत, सुगम संगीत, शास्त्रीय व उपशास्त्रीय। इन सभी विधाओं की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। शास्त्रीय संगीत शास्त्रबद्ध व नियमबद्ध होने के कारण हमें दैनिक जीवन व क्रियाकलापों में अनुशासित होने के लिए प्रेरित करता है। वहीं, लोक-संगीत, जन-साधारण की भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम माना जाता है। इससे हम समाज, विभिन्न परंपराओं, व्यक्ति विशेष, भौगोलिक परिवेश, ऐतिहासिक गाथाओं इत्यादि के बारे में जान सकते हैं।

ऐसी मान्यता है कि जब मानव ने अपने भावों को व्यक्त करना चाहा, तब श्रुतियाँ सहायक बनीं। अ, ओ, आ, इ ऐसी ध्वनियाँ सुनाई दीं, जो कानों को मधुर लगीं और तभी से संगीत इस धरती पर जीवनदायी मान लिया गया। इस सांगीतिक ध्वनियों का प्रयोग करके कई दशकों से विशेषज्ञों ने कठिन परिश्रम से इन्हें सजाया, सँवारा और इन पर शोध किए। उपरोक्त सभी बातों को आप जैसे बच्चों तक पहुँचाना हमारा कर्तव्य है। अत: संगीत शोध के भंडार से पाठ्यक्रमानुसार कुछ विशेष प्रसंगों को चुनकर हम आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस पाठ्यपुस्तक में स्वदेशी संगीत की परंपरा का व्याख्यान है। भारतीय संगीत के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए संगीत की उत्पत्ति एवं विकास का संक्षिप्त वर्णन, हिंदुस्तानी संगीत की विविध विधाएँ, वैदिक काल, रामायण एवं महाभारत काल में प्रचलित संगीत से संबंधित पर्याप्त विषय वस्तुओं की जानकारी, प्रचलित गायन एवं वादन शैलियाँ, महत्वपूर्ण सांगीतिक परिभाषाएँ जो शास्त्रीय संगीत के आधार तत्व हैं इत्यादि का परिचय दिया गया है। हिंदुस्तानी संगीत में राग पद्धति के क्रमिक विकास के अंतर्गत राग के सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए पाठ्यक्रम में दिए गए रागों का विवरण एवं उनमें गाई-बजाई जाने वाली कुछ बंदिशें दी गई हैं।

इस पाठ्यपुस्तक में विष्णु नारायण भातखण्डे एवं विष्णु दिगम्बर पलुस्कर द्वारा निर्मित हिंदुस्तानी संगीत में प्रचलित स्वर-ताल-लिपि–पद्धतियाँ, प्रमुख तालों के ठेके एवं लयकारी, वाद्यों का वर्गीकरण, प्रचलित वाद्यों का सचित्र वर्णन, गायन एवं सितार वादन के कतिपय घरानों का उल्लेख, संगीत के महान कलाकारों एवं संगीतज्ञों का योगदान आदि विषयों का सविस्तार वर्णन है। इस पाठ्यपुस्तक को रोचक तथा ज्ञानवर्धक बनाने के लिए इसमें लघु तथा मनोरंजक परियोजनाओं को भी सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है। आप सभी हिंदुस्तानी संगीत की

Reprint 2026-27

© NCERT not to be republished

इस पाठ्यपुस्तक के अध्यायों को पढ़कर अपना ज्ञानवर्धन करें। यह पाठ्यपुस्तक उच्च माध्यमिक स्तर पर उन बच्चों की दक्षताओं को बढ़ाने के लिए है, जो हिंदुस्तानी संगीत में गायन एवं वादन सीख रहे हैं।

इस पाठ्यपुस्तक का अध्ययन करने के प्रतिफल—

* भारतीय संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास का ज्ञान।
* हिंदुस्तानी संगीत के सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष की समझ।
* 12वीं शताब्दी तक संगीत में लिखे गए कुछ प्राचीन ग्रंथों का परिचय।
* गायन एवं वादन की मुख्य विशेषताओं पर मनन–चिंतन।
* हिंदुस्तानी संगीत की प्रचलित स्वर-ताल-लिपि पद्धतियों को जानना हैं।
* नानाविध बंदिशों की रूपरेखा।
* गायन के साथ संगत के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले वाद्ययंत्र तथा अन्य वाद्यों की संरचना एवं वादन-विधि का ज्ञान।
* हिंदुस्तानी संगीत के विकास में सहायक प्रसिद्ध कलाकारों एवं उनके घरानों का योगदान।
* कुछ मुख्य कलाकारों का परिचय जिनके योगदान से संगीत विश्व में मुखरित हुआ।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा पहली बार *हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन* पाठ्यपुस्तक बनाई गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशा निर्देशानुसार यह पाठ्यपुस्तक बनाई गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान, स्वदेशी संस्कृति एवं विश्वविद्यालय या उच्च शिक्षा में कलाओं की शिक्षा जैसे कई बिंदुओं पर बल दिया गया है। इसी संदर्भ में इस पाठ्यपुस्तक की संरचना की जा रही है। हम आशा करते हैं कि यह पाठ्यपुस्तक आपके लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगी। इस पाठ्यपुस्तक में सुधार हेतु आप अपने सुझाव हमें अवश्य भेजें ताकि द्वितीय संस्करण में इस पाठ्यपुस्तक को और भी समृद्ध एवं रुचिकर बनाया जा सके।

शर्बरी बैनर्जी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में सहयोग के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् विभिन्न संस्थाओं, विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

परिषद्, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग की पवन सुधीर *विभागाध्यक्ष एवं प्रोफ़ेसर* एवं ज्योत्सना तिवारी, *प्रोफ़ेसर* के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने अपना मूल्यवान समय और सहयोग प्रदान कर इस पुस्तक को उपयोगी बनाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इस पुस्तक के निर्माण में श्वेता उप्पल, *मुख्य संपादक,* प्रकाशन विभाग का योगदान भी सराहनीय है।

परिषद्, इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। पाठ्यपुस्तक परामर्श समिति के सदस्यों के अतिरिक्त इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान करने के लिए परिषद् नीरा चौधरी, *विभागाध्यक्ष* (संगीत विभाग), मगध महिला कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय; दीनानाथ मिश्र, *अध्यापक* (संगीत) केंद्रीय विद्यालय, मोतीहारी, बिहार; मल्लिका बैनर्जी, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, स्कूल ऑफ़ परफ़ॉर्मिंग एंड विज़ुअल आर्ट्स, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं प्रज्ञा वर्मा (सी.बी.एस.ई.) नयी दिल्ली के सहयोग के प्रति सहृदय आभार प्रकट करती है।

परिषद् संगीत नाटक अकादमी के सदस्यों, रीता स्वामी, *सचिव*, जयन्त चौधरी एवं प्रीत पाल (फोटो सेक्शन) के प्रति आभारी है, जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान किया।

परिषद्, स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण गर्ग, *संपादक*, संगीत कार्यालय, हाथरस के प्रति अपना आभार प्रकट करती है, जिन्होंने क्रमिक पुस्तक मालिका से रागों की बंदिशें छापने की अनुमति प्रदान की। इसके साथ ही परिषद् उस्ताद वासिफ़ुद्दीन डागर के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने डागर घराने की ध्रुपद एवं धमार की बंदिशें पाठ्यपुस्तक के लिए उपलब्ध कराईं। अनुपम महाजन, प्रोफ़ेसर, संगीत एवं कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी मसीतखानी एवं रज़ाखानी गत पाठ्यपुस्तक के लिए उपलब्ध कराईं जिसके लिए परिषद् उनका आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग की शिखा श्रीवास्तव, *जे.पी.एफ.;* संजीद अहमद, *डी.टी.पी ऑपरेटर,* काजल कुमारी एवं सूरज, *टाइपिस्ट*, के प्रति आभार प्रकट करती है। मीनाक्षी, *सहायक संपादक*, हरिदर्शन लोधी एवं राजश्री सैनी, *डी.टी.पी ऑपरेटर*, प्रकाशन प्रभाग एवं पाठ्यपुस्तक डिज़ाइनर श्वेता राव के प्रति भी परिषद् अपना आभार सहृदय से व्यक्त करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, परिषद् उन सभी के प्रति अपना आभार प्रकट करती है।

परिषद्, प्रकाशन कार्य में सक्रिय सहयोग के लिए प्रकाशन प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का भी आभार व्यक्त करती है।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

मुख्य सलाहकार

अनुपम महाजन, *प्रोफ़ेसर*, *भूतपूर्व अधिष्ठात्री* एवं *विभागाध्यक्ष*, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मधु बाला सक्सेना, *प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त)*, संगीत एवं ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, *पूर्व विभागाध्यक्षा*, संगीत एवं नृत्य विभाग, *अधिष्ठात्री*, प्राच्य विद्या संकाय, *कार्यकारी कुलपति*, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

सदस्य

मुकुन्द नारायण भाले, *अध्यक्ष* (सेवानिवृत्त), इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़

मुकेश भारती, *अध्यापक* (संगीत), केंद्रीय विद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश

योगिता, *अध्यापिका* (संगीत), गवनर्मेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नयी दिल्ली

रेशमा हरनाल, *अध्यापिका* (संगीत), *(सेवानिवृत्त)*, सर्वोदय कन्या विद्यालय, दिल्ली

वासिफुद्दीन डागर, *ध्रुपद कलाकार*, *अध्यक्ष*, ध्रुपद सोसाइटी

विजय शंकर मिश्र, *संगीत लेखक*, *निदेशक*, सोसाइटी फ़ॉर एक्शन थ्रू म्यूज़िक, नयी दिल्ली

सचिन सागर, *संगीत लेखक*, उत्तर प्रदेश

सदस्य समन्वयक

शर्बरी बैनर्जी, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत पद्धतियों के क्रमिक विकास को दर्शाता कलात्मक वृक्ष

भूमिका— भारतीय संगीत का ऐतिहासिक अवलोकन

चित्र अ— लोक संगीत प्रस्तुत करते हुए कलाकार

भारतीय संगीत के ऐतिहासिक अवलोकन के लिए सर्वप्रथम मानव की उत्पत्ति और इस सृष्टि में व्याप्त उन तत्वों पर ध्यान देना होगा जिनके कारण यह सृष्टि गतिमान है, जैसे— ध्वनि, स्वर, लय आदि। मानव को ध्वनि एवं लय का एहसास सर्वप्रथम दिल की धड़कन सुनकर एवं इसके पश्चात् पत्तों की सरसराहट, मेघों की गर्जना, वर्षा के बूँदों की टिप-टिप, झरनों से गिरते पानी का निनाद, पक्षियों के कलरव, पशु-पक्षियों की आवाज़ आदि से हुआ होगा। ध्वनि एवं लय का एहसास और किन-किन गतिविधियों से हो सकता है इसकी एक सूची बनाएँ। इस सूची के कुछ वर्ग बन सकते हैं, जैसे— प्राकृतिक, मनुष्य द्वारा कृत इत्यादि। स्वाभाविक है कि इन प्राकृतिक घटनाओं में छिपी ध्वनि एवं लय ने सर्वप्रथम मनुष्य का ध्यान आकर्षित किया होगा। ऊपर दी गई या अन्य किसी भी गतिविधि को मोबाईल या किसी अन्य यंत्र द्वारा रिकार्ड करें और सुनें कि उसमें ध्वनि या लय किस तरह अभिव्यक्त हो रही है। मनुष्य के विविध भाव, जैसे— प्रसन्नता, दु:ख, हठ, आक्रोश, शौर्य, ललकार आदि भी मनुष्य के हृदय से स्वभावतया लय, छंद एवं ध्वनि के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। जिन विविध भावों का मानव ने क्रमश: अनुभव किया, उन रसात्मक अनुभूतियों को ध्वनि एवं लयबद्ध कर अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया क्रमश: संगीत बनी। संगीत से अभिप्राय है— 'कर्ण प्रिय ध्वनि'। यही संगीत क्रमश: मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गया। जब मानव ने समूह में रहना प्रारंभ किया होगा, तब भाषाएँ विकसित हुई होंगी। संवाद, हाव-भाव एवं कंठध्वनि के विविध प्रयोगों से भी संभव है, परंतु भाषा बौद्धिक ज्ञान एवं शब्दों के अर्थ पर निर्भर करती है। यह मानना पड़ेगा कि संगीत भावानुभूति पर निर्भर करता है। इसीलिए यह कहना भी गलत न होगा कि मानव जीवन में पहले संगीत ने अपना स्थान बनाया तत्पश्चात् भाषा ने अपनी जगह बनाई। इसके पश्चात् भाषा का रसात्मक प्रयोग करके संगीत में ढाला गया, जिसका परिष्कृत रूप आज विभिन्न संगीत शैलियों के रूप में प्रचलित है। ऊपर दिया गया तर्क क्या आपको सही लगता है। हाँ या नहीं, उदाहरण सहित इसकी पुष्टि कीजिए।

संगीत की उत्पत्ति

संगीत की उत्पत्ति के संदर्भ में अनेक मत-मतांतर होने पर भी एक बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि गान की सहज प्रवृत्ति होने के कारण, गुनगुनाना, सार्थक शब्दों को किसी धुन या

© NCERT not to be republished

किसी लय के आश्रय से गाना, किसी धातु या तंतु को वाद्य के रूप में बजाना, मुख मुद्रा, हस्त मुद्रा या पद संचालन से नृत्य के रूप में भावों को अभिव्यक्त करते हुए हाव-भाव का प्रयोग करना आदि से ही विकसित प्रयोगों को संगीत की उत्पत्ति का मूलाधार कहा जा सकता है।

संगीत की उत्पत्ति के संबंध में कुछ किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं, जैसे— संगीत का जन्म (ॐ) 'ओउम्' शब्द से हुआ। *ओउम्* शब्द के तीन अक्षर 'अ' 'उ' तथा 'म' ब्रह्मा, विष्णु व महेश के रूप में ईश्वरीय शक्ति के द्योतक हैं। *ओउम्* परमेश्वर की सर्वोत्तम संज्ञा है। 'ओम्' के उच्चारण के फलस्वरूप नाद, नाद से श्रुति व स्वर और स्वर से ही संगीत की उत्पत्ति हुई है। एक कथा के अनुसार, हज़रत मूसा को एक पत्थर प्राप्त होने का उल्लेख है जिस पर पानी की धार पड़ने से उसके सात टुकड़े हो गए और पानी की सात धाराएँ प्रवाहित होने लगीं। उन धाराओं से सात ध्वनियाँ निकलीं, यही सात ध्वनियाँ संगीत के सात स्वरों के रूप में प्रचलित हुईं।

बच्चों क्या आपको पता है कि प्रथम या द्वितीय शताब्दी में भारतीय संगीत पर लिखे गए *नारदीय शिक्षा* ग्रंथ के रचयिता नारद का मत है कि पशु-पक्षियों की ध्वनि ने ही सात स्वरों को जन्म दिया है। आज भी जब हम किसी बगीचे या पेड़-पौधों के बीच से गुज़रते हैं तो पक्षियों की चहचहाट हमारे कानों तक ज़रूर पहुँचती है। क्यों हमें इनमें संगीत के सात स्वर सुनाई देते हैं? जिस प्रकार ईंट, पत्थर आदि से एक भवन निर्मित होता है, पत्थरों को तराश कर मूर्ति बनाई जाती हैं विभिन्न रंगों के मिश्रण से चित्र बनता है, उसी प्रकार षड्ज, ऋषभ, गंधार आदि सप्त स्वरों तथा विलंबित, मध्य व द्रुत आदि लयों के सम्मिश्रण से संगीत विभिन्न रागों, बंदिशों, गीतों व धुनों आदि के रूप में विशेष आकार ग्रहण करता है। सभी रचनाएँ विभिन्न विचारों को व्यक्त करते हुए रस व आनंद की अनुभूति कराती हैं।

संगीत से गायन, वादन व नृत्य, तीनों का बोध होता है। 'गायन' का संबंध कंठ संगीत से है, जबकि 'वादन' का तात्पर्य विभिन्न वाद्ययंत्रों के माध्यम से प्राप्त ध्वनि से है। हस्त मुद्रा, पद संचालन तथा अभिनय से युक्त अभिव्यक्ति 'नृत्य' से संबंध रखती है। मानव को उल्लसित करने वाला संगीत न केवल मस्तिष्क पर सीधे सकारात्मक प्रभाव डालता है, बल्कि संगीत से अनेक मानसिक रोगों का उपचार किए जाने के दृष्टांत भी हमारे साहित्य में यत्र-तत्र उपलब्ध

चित्र आ— पारंपरिक लोक गायन प्रस्तुत करते हुए कलाकार

© NCERT not to be republished

हैं। आधुनिक काल में संगीत चिकित्सा पर विशेष शोध कार्य चल रहे हैं। पशु-पक्षी व पेड़-पौधों पर भी संगीत के प्रभाव के सार्थक परिणाम अंकित किए गए हैं।

आइये विचार करें कि संगीत कब से हमारे समाज का अंश है। ईसा के जन्म से पूर्व भी भारतीय संगीत उन्नत अवस्था में था, जिसका प्रमाण सिंधु घाटी की खुदाई से प्राप्त होने वाले अवशेषों से मिलता है। सात छिद्र वाली वंशी, विभिन्न प्रकार की वीणाएँ, मृदंग तथा अन्य प्रकार के अवनद्ध वाद्य एवं करताल बजाते हुए नतर्कियों की पूर्ण या खंडित मूर्तियाँ तत्कालीन संगीत अभिरुचि और उसकी उन्नत अवस्था का परिचय देती हैं। बौद्धकालीन जातक कथाओं में भारतीय संगीत और अनेक प्रकार के वाद्ययंत्रों की तत्कालीन स्थिति से संबंधित उल्लेख प्राप्त होते हैं।

> **"अनादि सम्प्रदायं यद् गन्धर्वैः सम्प्रयुज्यते**
> **नियतं श्रेयसो हेतुर्तयद्गन्धर्व प्रचक्षते।।"**
>
> **पंडित रामामान्य — *स्वरमेला कला निधि***

प्राचीन शास्त्रों में संगीत को गांधर्व की संज्ञा देते हुए कहा गया है—

अर्थात् जो अनादि है, इसे कब व कैसे उत्पन्न किया गया, यह नहीं कहा जा सकता, परंतु जिसका प्रयोग गंधर्वों द्वारा किया गया, जो नियमबद्ध व श्रेयस अर्थात् आत्मिक उन्नति का साधन है, उसे ही 'गांधर्व' कहा गया है। गंधर्वों द्वारा प्रयुक्त किए जाने के कारण ही संभवत: संगीत को 'गांधर्व' संज्ञा दी गई।

चित्र इ— नाट्य संगीत प्रस्तुत करते हुए कलाकार

सामवेद

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो वेदकालीन सभ्यता में *सामवेद* का गान किए जाने के लिखित साक्ष्य मिलते हैं, जिसके साथ अनेक वाद्यों का वादन भी किया जाता था। *ऋग्वेद* की ऋचाओं में से गेय ऋचाओं के संकलन के फलस्वरूप *सामवेद* की रचना हुई है। *ऋग्वेद* की ऋचाओं के पाठ्य स्वरूप की अपेक्षा जब उनका 'साम' स्वरों सहित विधिपूर्वक गान किया जाता था तो काव्य व संगीत के समन्वय से वे ऋचाएँ ईश्वर आराधना के लिए अधिक प्रभावशाली हो जाती थीं। ऐसी ही ऋचाओं का संकलन है *साम संहिता*।

> वैदिक काल में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित— ये तीन स्वर सर्वप्रथम प्रचलन में थे; इसके बाद क्रमश: तीन से पाँच व पाँच से सात स्वरों का विकास हुआ।

इसी गेय स्वरूप का विकास होता रहा और भिन्न-भिन्न नाम व संज्ञा से इन स्वरों का तथा सप्तक आदि का विकास होता चला गया। साम गान अधिकतर विभिन्न धार्मिक कार्यों को

चित्र ई— पारंपरिक अवनद्ध वाद्य का वादन करते हुए कलाकार

संपन्न किए जाने वाले यज्ञ आदि के अवसर पर पंडितों या पुरोहितों द्वारा गाया जाता था, जिन्हें 'ऋत्विज' कहा जाता था। साम के प्रमुख तीन ऋत्विज गायक होते थे— प्रस्तोता, उद्‌गाता और प्रतिहर्ता। मुख्य गायक उद्‌गाता होता था प्रस्तोता व प्रतिहर्ता उसके सहायक होते थे। आज भी धार्मिक अनुष्ठानों में मंत्र उच्चारण की रीति चली आ रही है। ऐसे किसी अनुष्ठान के बारे में एक परियोजना बनाएँ जो ई-सामग्री की तरह प्रस्तुत हो सकती है।

प्राचीन साहित्य का अध्ययन करने पर एक और बात ज्ञात होती है कि प्रारंभ से ही संगीत की दो धाराएँ साथ-साथ चलती रही हैं जिनको 'मार्ग' व 'देशी' कहा गया है। दामोदर पंडित कृत संगीत दर्पण के अनुसार—

"गीतं वाद्यं नृत्यं च त्रयं संगीतमुच्यते
मार्ग-देशी विभागेन संगीतं द्विविधम् मतम्।।"

संगीत दर्पणं, श्लोक-3

अर्थात् गीत, वाद्य और नृत्य तीनों को संगीत कहा जाता है। संगीत दो प्रकार का माना गया है— मार्ग और देशी। मार्ग संगीत, नियमबद्ध और अपरिवर्तनीय था। देशी संगीत में नियमों की अपेक्षाकृत शिथिलता थी और लोक रुचि के अनुरूप होने से इसमें परिवर्तन की गुंजाइश भी रहती थी। देशी को परिभाषित करते हुए *संगीत रत्नाकर* में कहा गया है—

"देशे देशे जनानां यद्रुच्याहृदयरञ्जकम्
गीतं वादनं च नृत्तं तद्देशीत्यभिधीयते।।"

***संगीत रत्नाकर*, स्वरगताध्याय: श्लोक 23**

अर्थात् अलग-अलग प्रांतों में लोगों की रुचि के अनुसार जो मनुष्य के हृदय को आनंदित करने वाला गीत, वाद्य और नृत्य होता है, उसे देशी कहा जाता है।

इस प्रकार हर काल और हर समाज में नियमबद्ध और परिवर्तनीय, इन दोनों प्रकार का संगीत प्रचार में रहा।

पौराणिक कहानियों में गंधर्व, किन्नर, यक्ष, अप्सरा आदि संगीत से जुड़ी अनेक प्रकार की जातियों का उल्लेख मिलता है जिनका कार्य संगीत की आराधना व प्रदर्शन करना था। *रामायण*

एवं *महाभारत* आदि महाकाव्यों में अनेक सांगीतिक तत्वों का उल्लेख मिलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय संगीत प्राचीन काल से ही न केवल प्रचार में था, अपितु उसका एक विशिष्ट शास्त्र भी था।

> रामायण और महाभारत काल में संगीत के अनेक संदर्भ प्राप्त होते हैं। बाल्मीकी रचित *रामायण* में, श्रीराम व सीता के पुत्र लव-कुश द्वारा राजा राम के समक्ष राम कथा का गान करने का उल्लेख मिलता है।
>
> *महाभारत* में भी धनुर्धारी अर्जुन द्वारा राजा विराट की पुत्री उत्तरा को संगीत और नृत्य की शिक्षा प्रदान करने का और स्वयं अर्जुन द्वारा मृदंग वादन से संगीत करने का उल्लेख मिलता है।

लगभग दूसरी शताब्दी में रचित *नाट्यशास्त्र* में भरत मुनि ने जिस विस्तार के साथ संगीत की चर्चा की है, उससे यह सिद्ध हो जाता है कि विश्व की अन्य सभ्यताओं से भी बहुत पहले भारतीय संगीत नियमबद्ध होकर जनमानस में प्रचलित था। हमारे ग्रंथों जैसे वेदों, शिक्षा इत्यादि में दिए गए संदर्भ इस बात को प्रमाणित करते हैं।

भरतकृत *नाट्यशास्त्र* प्राचीन काल के उपलब्ध ग्रंथों में से एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। नाटक या नाट्य कला के संदर्भ में गायन, वादन व नृत्य की प्रधानता के कारण इसे 'नाट्यवेद' भी कहा गया। संगीत की विस्तृत चर्चा के कारण इसे 'गांधर्ववेद' की भी संज्ञा दी गई।

कालांतर में राजा समुद्रगुप्त (गुप्त काल 300 ई.–600 ई.) की वीणावादक के रूप में चित्रित मुद्रा यह भी सिद्ध करती है कि उस काल में संगीत को केवल राज्याश्रय ही प्राप्त नहीं था, अपितु तत्कालीन शासक स्वयं भी संगीत की शिक्षा ग्रहण करते थे। ऐसा माना जाता है कि गुप्त काल में भारतीय साहित्य, संस्कृति, शिल्पकला और संगीत का बहुत विकास हुआ। महाकवि कालिदास की रचनाओं में भी संगीत संबंधी अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं। सम्राट हर्षवर्धन स्वयं एक उत्कृष्ट गायक थे और उनके दरबार में नृत्य, गीत व संगीत के उत्कृष्ट प्रयोग व प्रदर्शन होते थे। हर्षवर्धन की बहन राजश्री भी संगीत में निपुण थीं।

मतंग मुनि द्वारा रचित *बृहद्देशी*, जो लगभग सातवीं सदी की रचना है, संगीत के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण ग्रंथ माना गया है।

मध्य काल में संगीत के विकास के अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं। परिवर्तन मानव प्रकृति और सृष्टि का गुण है, इसीलिए संगीत के स्वरूप भी निरंतर परिवर्तित होते रहे। शार्ङ्गदेव कृत *संगीत रत्नाकर* में

चित्र ३— कला उत्सव में गायन एवं वादन प्रस्तुत करते हुए कलाकार

© NCERT not to be republished

चित्र ऊ— राजस्थान का लोक संगीत प्रस्तुत करते हुए कलाकार

(13वीं शताब्दी) मार्ग व देशी, दोनों प्रकार के संगीत की अवधारणा स्पष्ट की गई है। इस काल में पूर्व प्रचलित ग्राम और मूर्च्छना पद्धति पर आधारित जाति गायन के दस लक्षणों के आधार पर विकसित राग गायन का आविर्भाव हुआ। जाति गायन से धीरे-धीरे प्रबंध गेय विधा का उद्भव हुआ।

संगीत रत्नाकर में अनेक विद्वानों का उल्लेख किया गया है, जैसे— सदाशिव, दुर्गशक्ति, भरत, कश्यप, मतंग, कोहल, दत्तिल, नान्यदेव, भोजराज आदि। इन विद्वानों ने 13वीं शताब्दी तक संगीत की परंपरा को आगे बढ़ाया। आप सभी कभी न कभी किसी ऐतिहासिक स्थापत्य कला को देखने या संग्रहालय में गए हों। यह सोचो कि इनमें संगीत (गीत, वाद्य और नृत्य) कहाँ दिखता है और इनमें किस शताब्दी की यह छवि है? घर में एलबम से कुछ चित्र निकालकर याद करो उन क्षणों को।

प्राचीन तमिल संगीत

प्राचीन काल से ही भारत में संगीत का विकास निरंतर होता रहा, कई पड़ाव आए, राजनीतिक बदलाव एवं समय के साथ-साथ मनुष्य की रुचि में कई परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए। सभी प्रकार के बदलाव व परिस्थितियों के बावजूद संगीतज्ञों के प्रयास से संगीत उन्नति की सीढ़ी पर धीरे-धीरे अग्रसर होता रहा। दक्षिण भारत में तीसरी सदी ईसा पूर्व से संगीत की एक और शैली का विकास हुआ, जिसे 'तमिल संगीत' के नाम से जाना जाता है। तमिल संगीत का उद्भव अगस्त्य मुनि एवं उनके शिष्य तोल्काप्पियर (*तोल्काप्पियम* के रचयिता) के काल से माना जाता है। *तोल्काप्पियम* दक्षिण भारत के संगीत एवं साहित्य के निरूपण करने का एक अनन्यतम् ग्रंथ है। द्रविड़ परंपरा में चेर, चोल, पाण्ड्य, पल्लव, सातावाहन आदि प्रसिद्ध समुदाय थे। इनका निवास स्थान विंध्य पर्वत का निचला हिस्सा था। इन समुदायों की भाषा में काफ़ी समानता थी। सभी समुदायों की भिन्न सत्ता थी, लेकिन इनका साहित्य, कला एवं शिक्षा के लिए 'संगम' नाम की बुद्धिजीवी गोष्ठी थी। ऊपर दिए गए सभी समुदाय के विशिष्ट व्यक्ति 'संगम' के सदस्य होते थे।

इस काल में संगीत, नृत्य एवं कलाओं में निम्नलिखित ग्रंथों की रचना हुई— *अइन्कुरूनूरू, अकनानूरू, पुरनानूरू, कलित्तोगइ, कुरून्तोगइ, नट्रीनइ, परिपाडल, पत्तिट्रपाट्टु।*

महाकाव्य— *चिलप्पदिगारम,मणिमेखलइ, सीवक चिन्तामणि।*

सांगीतिक ग्रंथ— *पञ्चमरबु।*

'पण' संगीत का मुख्य स्केल/सप्तक था और 'तिरम' गौण समूह माना जाता था। संगीत के स्केल/सप्तकों के नाम, उनके उद्भव स्थल के अनुसार नामकरण किए गए थे, जैसे—

* मुल्लई पण (पर्वत क्षेत्र से)
* नेईथल पण (समुद्री क्षेत्र से)
* कुरीन्जी पण (वन क्षेत्र से)
* मरूदम पण (हरे-भरे क्षेत्र से)
* पालई पण (रेगिस्तान क्षेत्र से)

चित्र ए— अवनद्ध वाद्य का प्रारंभ

संगीत के स्वर हिंदुस्तानी संगीत के अनुकूल थे, लेकिन उनके नाम भिन्न थे। कुरल, तुत्तम, कइक्किलइ, उलइ, इली, विलरि और तारम, संगीत को 'इसइ' कहा जाता था। इसमें प्रयुक्त होने वाले स्वरों की ऊँचाई या निचाई को 'केल्वि' कहा जाता था। श्रुति को 'अलुकु' और ताल को 'सीर' या 'पाणि' के नाम से जाना जाता था।

शैव वंश की सांगीतिक रचनाएँ *तेवारम्*, *तिरूवाचकम्*, *तिरूप्पुगल*, *तिरूवाइमोज़ी* थीं। इसके रचयिता अप्पर, तिरूज्ञान सम्बन्दर, सुंदरमूर्ति, नायनमार थे। वैष्णव रचनाएँ *तिरूप्पावइ* और *तिरूवैमपावइ* थीं जो विशिष्ट रागों एवं तालों में गाई जाती थीं। यह संगीत 13वीं शताब्दी तक चेर, चोल एवं पाण्डेय् राजाओं के काल तक प्रचलित रहा।

कर्नाटक संगीत का उद्‌गम

कर्नाटक संगीत का उद्भव 14वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के साथ हुआ। आचार्य विद्यारण्य (1320–80) की पुस्तक *संगीत सार* से इस बात की पुष्टि होती है। 'मेल' का निरूपण सर्वप्रथम उन्हीं की पुस्तक से प्राप्त होता है। कर्नाटक संगीत के प्रचार एवं विकास के लिए उनके शिष्यगण संगीतज्ञ व्यासराय, बसवराय, पुरन्दर दास (1484–1564) को श्रेय दिया जाता है। गीत, सूलादि और भजन संप्रदाय की विधाएँ इन सभी संगीतज्ञों के प्रयास से विकसित हुईं— ये 'दास कुटा' नाम से प्रचलित थे। इसी तरह अन्नमाचार्य ने हज़ारों पद एवं संकीर्तन की रचना की और यह 'तल्लपाक' नाम से जाने जाते थे। रामा अमात्य जो वारंगल के तिम्मा राया/रामा राया के राज्य में मंत्री थे, उन्होंने *स्वरमेल कलानिधि* में 'मेल' सिद्धांत को परिष्कृत रूप से समझाया। इसी समय कीर्तन और तरंगम का प्रचलन भी भ्रदचाल राम दास और नारायण तीर्थ ने किया। क्रमश: मेल के सिद्धांत में बदलाव आए। गोविन्द दीक्षितर एवं व्यंकटमुखी जैसे प्रवीण संगीतज्ञों ने अपने ग्रंथ *संगीत सुधा* एवं *चतुर्दण्डी प्रकाशिका* में मेल के मूल सिद्धांतों का वर्णन किया, जिसे गोविन्दाचार्य ने *संग्रह चूड़ामणि* में भी सम्मिलित किया।

© NCERT not to be republished

चित्र ऐ— ओडिसा का पारंपरिक लोक वाद्य — निसान

अठारहवीं शताब्दी के उपरांत कर्नाटक संगीत

राजाओं के दरबारों में 18वीं शताब्दी के उपरांत रागम् तानम् एवं पल्लवी प्रचलन में आईं। संगीतकारों के गुणों को समाज में दर्शाने के लिए इन विधाओं को अपनाया गया। कर्नाटक संगीत के स्वर्णिम काल का श्रेय त्यागराज (1767–1847), श्यामाशास्त्री (1776–1835) और मुत्तुस्वामी दीक्षितर (1762–1827) को दिया जाता है। 'कृति' (जो शुद्ध रागों को दर्शाती है) का विकास इन तीनों संगीतज्ञों के कारण ही संभव हुआ। महाराजा स्वाती तिरूनाल (1813–47) एवं गोपालकृष्ण भारती ने पदम्, वर्णम् एवं जावली जैसी सांगीतिक विधाओं को प्रचलित किया।

मध्य काल में उत्तरी भारत में मुसलमानों का आगमन हुआ, जिस कारण भारतीय संस्कृति पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव पड़ता चला गया। उत्तर भारत की ओर से मुस्लिमों के प्रवेश के कारण उत्तर भारतीय संस्कृति, संगीत व कलाओं में मुस्लिम व भारतीय संस्कृति का मिला-जुला रूप सामने आया। दक्षिण भारतीय संगीत इस सांस्कृतिक परिवर्तन से कम प्रवाहित हुआ। इसीलिए 14वीं शताब्दी से उत्तर भारतीय संगीत पद्धति 'हिंदुस्तानी संगीत' के नाम से व दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति 'कर्नाटक संगीत' के नाम से दो विभिन्न धाराओं के रूप में विकसित होने लगी। कर्नाटक संगीत पद्धति दक्षिण भारत के तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश व केरल आदि प्रांतों में प्रचलित है। 'हिंदुस्तानी संगीत' भारतीय संगीत के रूप में अन्य सभी प्रांतों में प्रचलित है।

मध्य काल में संगीत का समुचित विकास हुआ। इसी काल में अमीर खुसरो से कव्वाली, सुल्तान हुसैन शर्की से खयाल गान, मानसिंह तोमर से ध्रुवपद और वाज़िद अली शाह से ठुमरी गायन को प्रोत्साहन मिला। अकबर के शासन काल में तानसेन और बैजू बावरा सदृश गायकों ने ध्रुवपद का श्रेष्ठतम् प्रदर्शन किया।

ब्रिटिश काल में संगीत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी हालाँकि तत्कालीन छोटी-छोटी रियासतों और ज़मीदारों के माध्यम से भारतीय संगीत पुष्पित और

चित्र ओ— गिरिजा देवी– हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन प्रस्तुत करते हुए

पल्लवित होता रहा। घरानों का आभिर्भाव इसी कारण हुआ। 19वीं शताब्दी से पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे और पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर के सद्प्रयासों के फलस्वरूप संगीत की विद्यालयी शिक्षा प्रारंभ हुई जिससे संगीत की शिक्षा जन-जन को सुलभ हो सकी। आज विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में जिस तरह के संगीत शिक्षण का प्रचार हमें दृष्टिगोचर हो रहा है यह इन दोनों विद्वानों की देन है। इस तरह हम पाते हैं कि भारत में संगीत सदा तीन स्तरों पर लोकप्रिय और प्रवाहित रहा है। पहला वह जिसमें शास्त्रीय नियमों के अंतर्गत ही गायन, वादन व नृत्य किया जाता था जिसे आज हम 'शास्त्रीय संगीत' कहते हैं। ध्रुपद, धमार, खयाल, तराना, चतुरंग, त्रिवट आदि गेय विधाएँ जो विभिन्न रागों में गाई जाती हैं, शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत आती हैं। दूसरा, 'उपशास्त्रीय संगीत' जिसमें नियमबद्धता तो है, किंतु उसमें लचीलापन होने के कारण कहीं-कहीं नियमों की शिथिलता भी ग्राह्य मानी गई है। ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी आदि गीत प्रकार इस वर्ग में सम्मिलित हैं। तीसरा, 'लोक संगीत' जो मूलत: लोक अर्थात् सामान्य रूप से जनसाधारण में प्रचलित रहा है, जो समाज में संपन्न की जाने वाली विभिन्न रस्मों, रीति-रिवाजों व दैनिक क्रियाकलापों से संबंधित रहता है। इसमें विवाह गीत, ऋतु गीत, झूले के गीत, खेती व चूल्हे-चक्की के गीत, विदाई गीत आदि गाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक अन्य संगीत के प्रकार को 'सुगम संगीत' के नाम से भी जाना जाता है। इसमें भक्ति संगीत, गीत, ग़ज़ल आदि समाविष्ट होते हैं। इनमें कभी शास्त्रोक्त रागों का, तो कभी लोकधुनों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

चित्र औ— हिमाचल प्रदेश का पारंपरिक सुषिर वाद्य— रणसिंघा

आज के युग में इंटरनेट के माध्यम से हम अनेक प्रकार के संगीत का आनंद ले सकते हैं। ऊपर दिए गए सांगीतिक विधाओं को इंटरनेट या किसी अन्य माध्यम से सुनें-सीखें और रिकॉर्ड करें। वर्तमान काल में भिन्न-भिन्न गायन शैलियों के कई घरानों का निर्माण हुआ। इसी काल में सितार, सरोद वाद्यों के लोकप्रिय होने से कई घराने निर्मित हुए। अत्यंत लोकप्रिय अवनद्ध वाद्य तबला के छह घराने प्रचार में आए, जबकि पखावज के मूल रूप से तीन घराने प्रचार में आए।

सारांश में यह कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत की शृंखला अनादि काल से चली आ रही है, जिसे प्रथमत: गंधर्व, किन्नर, अप्सराओं व देवी-देवताओं द्वारा प्रयोज्य माना गया और उसे गांधर्व की संज्ञा दी गई। तदोपरांत शास्त्रबद्ध होने पर वेदों, पुराणों, उपनिषदों व शिक्षा ग्रंथों आदि में वर्णित होने पर उसे मार्ग व देशी संगीत के रूप में परिभाषित किया गया। शास्त्रोक्त नियमों का कठोरता से पालन किए जाने पर उसे मार्ग कहा गया। आबद्ध होने पर भी उसमें लोकरुचि के आधार पर नियमों की शिथिलता किए जाने पर, देशी संगीत की श्रेणी में रखा गया।

© NCERT not to be republished

चित्र अं— लोक कलाकारों द्वारा पारंपरिक लोक वाद्य – वादन

यहीं से क्रमश: मंत्रोच्चारण, जातिगायन, ध्रुवगान, राग गायन, प्रबंधगान, ध्रुपद, धमार, ख्याल, चतुरंग, त्रिवट, तराना आदि गेय विधाओं का कालक्रमानुसार आविर्भाव होता चला गया। हज़ारों वर्षों से चली आ रही इस संगीत यात्रा में तंत्रीवादन की वादन शैलियों, सुषिर वाद्यों में अनेक प्रकार के रागों व धुनों आदि को नवीन चिंतन के साथ बजाने की रीति चली आ रही है। अवनद्ध वाद्यों में अनेक प्रकारों के अनुरूप नए-नए कायदे, परन, टुकड़ों आदि को नवीन तकनीकी के साथ बजाने की परंपरा भी वर्तमान काल तक अनवरत रूप से चली आ रही है। आश्रम, गुरुकुल व संगीतशालाओं आदि में गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से संगीत का संरक्षण व विकास मौखिक रूप से व शास्त्रबद्ध रूप में प्रवाहित होता रहा। उपशास्त्रीय संगीत के रूप में ठुमरी, दादरा, टप्पा, चैती, कजरी आदि विधाओं का विकास होता चला गया।

जनमानस में सामान्य रीति-रिवाजों, त्योंहारों आदि के अवसर पर जो संस्कार गीत, ऋतुगीत, पूजा गीत, विवाह गीत आदि गाए जाते हैं या बाँसुरी, ढोलक, शंख, मंजीरा, सारंगी या हारमोनियम आदि वाद्य बजाए जाते हैं या उनके साथ विभिन्न तरह के नृत्य किए जाते हैं, उन पर हर प्रांत या स्थानीय भाषाओं, बोलियों और वेशभूषा आदि की छाप दिखाई देती है। यह लोक संगीत के रूप में जाना जाता है। शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व लोक संगीत के बीच का प्रकार सुगम संगीत के रूप में पहचाना जाता है, जिसमें गज़ल, भजन, गीत, भक्ति संगीत, कीर्तन आदि गीत के प्रकार समन्वित रहते हैं। इनमें कभी शास्त्रीय संगीत के रागों व गेय विधाओं का प्रभाव दिखाई देता है तो कभी लोक विधाओं का।

इस चिर पुरातन काल से चली आ रही संगीत की शृंखला को अध्ययन व शोध कार्य की दृष्टि से तीन स्थूल भागों में विभाजित किया गया है—

प्राचीन काल— इसके अंतर्गत प्राक् वैदिक काल से लेकर विभिन्न काल खंडों से होते हुए 13वीं शताब्दी तक का क्रमिक विकास सम्मिलित है।

मध्य काल— इसके अंतर्गत 14वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक का सांगीतिक इतिहास व क्रमिक विकास सम्मिलित है।

आधुनिक काल— इसके अंतर्गत 19वीं शताब्दी से लेकर वर्तमान काल तक का सांगीतिक इतिहास व क्रमिक विकास सम्मिलित है।

अंतत: कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत कल्पना व चिंतन पर आधारित एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी उपवन में खिले पेड़, पौधे, पत्तों व फूलों के समान निरंतर परिवर्तनशील रहती है। नित नूतन आकार ग्रहण करती है, परंतु उपवन की परंपरागत रूपरेखा को संरक्षित व संवर्धित रखने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है।

© NCERT not to be republished

विषयवस्तु

आमुख — *iii*

प्राक्कथन — *v*

भूमिका— भारतीय संगीत का ऐतिहासिक अवलोकन — *xi*

क — हिंदुस्तानी संगीत — एक परिचय — 1

1. भारतीय संगीत का सामान्य परिचय — 3
2. आधार ग्रंथ — 18
3. हिंदुस्तानी संगीत के पारिभाषिक शब्द — 31
4. हिंदुस्तानी संगीत की गायन एवं वादन विधाएँ — 53

ख — राग— सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष — 63

5. हिंदुस्तानी संगीत में राग पद्धति का क्रमिक विकास — 65
6. राग परिचय एवं बंदिशें — 82
7. स्वर-ताल लिपि पद्धतियाँ — 154

ग — वाद्य-अध्ययन — 163

8. भारतीय संगीत में वाद्य वर्गीकरण — 165

घ — ताल-अध्ययन — 191

9. विभिन्न तालों के ठेके एवं लयकारी — 193

ङ — उत्तर भारतीय संगीत के घराने — 209

10. प्रमुख घराने — 211

संगीत में कुछ प्रसिद्ध नाम — *219*

परखें अपना सांगीतिक ज्ञान — *225*

परिशिष्ट 1 — *229*

चित्र आभार — *230*

© NCERT not to be republished

चित्र अ:— प्राचीन मूर्तियों और स्मारकों से प्राप्त सांगीतिक संदर्भ व साक्ष्य

क

हिंदुस्तानी संगीत—एक परिचय

1. भारतीय संगीत का सामान्य परिचय
2. आधार ग्रंथ

    सामवेद

    रामायण

    महाभारत

    नाट्यशास्त्र

    बृहद्देशी
3. हिंदुस्तानी संगीत के पारिभाषिक शब्द
4. हिंदुस्तानी संगीत की गायन एवं वादन विधाएँ

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।